

विजयानंद सूरि स्वर्गारोहण शताब्दी ग्रन्थ(फोल्डर नं. ०२०२३)  
संपादक - मुनिश्री नविनचंद्रविजयजी

मुख्य टाइटल  
आशीर्वाद  
प्रकाशकीय  
संपादकों की ओर से  
नवीन उपलब्धियों पर एक नजर  
अर्थ सहयोग  
अनुक्रमणिका  
हिन्दी विभाग

खण्ड-१ - ज्ञानांजलि

जैन धर्म का स्वरूप - आचार्य श्री विजयानंदसूरिजी-----	१
विनय के प्रकार - आचार्य श्री विजयवल्लभसूरिजी-----	१५
अनित्य भावना - आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्नसूरिजी-----	३१
पावागढ़ तीर्थ की ऐतिहासिकता - आचार्य श्री जगच्चन्द्रसूरिजी-----	४५
माणुस्सं खु सुदुल्ल हं - आचार्य श्री चन्दनमुनिजी-----	५०
ज्ञान भंडारों पर एक दृष्टिपात - मुनिश्री पुण्यविजयजी-----	६०
एक लाख परमारों का उद्धार - मुनिश्री नविनचन्द्रविजयजी-----	७७
जैन संमत व्याप्ति - श्री दलसुख मालवणीया-----	८५
निर्युक्ति साहित्य-एक पुनर्चिन्तन - श्री सागरमलजी जैन-----	८९
प्राकृत-साहित्य में उपलब्ध जैन न्याय के बीज - डॉ. धर्मचन्द जैन-----	१२४
भारत के सांस्कृतिक अभ्युदय में प्राकृत का योगदान - डॉ. जयप्रकाश खण्डेलवाल-----	१३४
व्यक्तित्व के समग्र विकास की दिशा में जैन शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता - श्रीचन्द्र	

सुराना ----- १४०

हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारी गच्छ का संक्षिप्त इतिहास - श्री शिव प्रसाद-----	१५९
जिनप्रतिमा और जैनाचार्य - श्री हंसराजजी शास्त्री-----	१८३
जैनदर्शन और केवलज्ञान - श्री मूलचंद चन्दूलाल बेड़ावाले-----	१९२
धर्मायतन, आवसा तथा कारोबार-एक सुख समृद्धि कारक तंत्र - डॉ. सोहनलाल देवोत-----	२०२

खण्ड-२ - श्रद्धांजलि

श्री विजयानंद सूरिश्चर स्तुति - मुनि श्री देवविजय-----	२०७
श्री आत्मानंद जयंती - आचार्य श्री विजयवल्लभसूरिजी-----	२०८
श्री विजयानंद सूरि - आचार्य श्री विजयसमुद्रसूरिजी-----	२१९
श्रीमद् विजयानंद सूरि म. का जीवन संदेश - आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्नसूरिजी-----	२२२
गुरु विजयानंद-स्मृति के वातायान से - आचार्य श्री विजय जनकचन्द्रसूरिजी-----	२२५

साधुता के शिखर – आचार्य श्री रत्नाकरसूरिजी-----	२२९
गुरु विजयानंद-एक विराट् व्यक्तित्व – आचार्य श्री विजय जगच्चन्द्रसूरिजी-----	२३३
धार्मिक चेतना के अग्रदूत – आचार्य श्री विजय नित्यानंदसूरिजी-----	२३७
कर्मयोगी श्री आत्माराम जी – उपाध्याय श्री वीरेन्द्रविजयजी-----	२४१
गुणों के रत्नाकर थे गुरु आतम – पंन्यास श्री जयन्तविजयजी-----	२४७
सत्य पथानुगामी गुरु विजयानंद – मुनि श्री धर्मधुरन्धरविजयजी-----	२४९
श्री जिनागम हम मन मान्योत.... – मुनि श्री अरूणविजयजी-----	२५२
श्रीमद् विजयानंद सूरि-जीवन और कार्य – मुनि नविनचन्द्रविजयजी-----	२५६
श्री विजयानंद सूरि-जीवन प्रसंग – मुनि श्री अमरेन्द्रविजयजी-----	३०७
श्रीमद् विजयानंद सूरि महाराज की जन्म कुंडली – पंडित जानकी प्रसाद चामुंडेरी-----	३२४
श्री विजयानंद सूरि एवं चिकागो विश्व धर्म परिषद् – मुनि श्री रत्नसेनविजयजी-----	३३०
पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज-लोकमंगल के लिए अर्पित जीवन – डॉ. जवाहरचन्द्र पटनी-----	३३६
श्री विजयानंद सूरि-कवि रूप में – प्रो. रामकुमार जैन-----	३४२
समर्पित शासन सेवक – श्री आशीषकुमार जैन-----	३४५
श्रीमद् विजयानंद सूरि और मूर्तिपूजा – साध्वी श्री किरणयशाश्रीजी-----	३५२
श्री विजयानंद सूरि एवं ईसाई मिशनरी – प्रो. पृथ्वीराज जैन-----	३५९
श्रम परम्परा के उज्ज्वलतम नक्षत्र थे गुरु विजयानंद – श्री धर्मपाल जैन-----	३६६
आचार्य श्री विजयानंद सूरि एवं उनका प्रमुख ग्रन्थ – डॉ. रजनीकान्त एस. शाह-----	३६९
कवि चन्द्रलाल कृत श्री आत्मानंद जीवन चरित्र-परिचय एवं समीक्षा – डॉ. नरेश-----	३७४
श्री विजयानंद सूरिजी के साहित्य सृजन का क्रमिक इतिहास – श्री अभय कुमार-----	३८१
आत्माराम – श्री जयचंद बाफना-----	३८६
पश्चिम में जैन धर्म एवं संस्कृति के सर्वप्रथम उद्घोषक – श्री वीरचंद राघवजी गांधी – श्री मेघराज महेता-----	३९०
श्री विजयानंद सूरि एवं उनकी जन्म स्थली लहरा – श्री सत्यपाल जैन-----	३९८
श्रीमद् विजयानंद सूरि के नाम से चलने वाली शिक्षण संस्थाएं एवं सभाएं-----	४०९
खण्ड-३ – काव्यांजलि	
गुरु स्तुति – मुनि श्री मोक्षरतिविजयजी-----	४२३
श्री विजयानंद प्रशस्ति – मुनि श्री चतुरविजयजी-----	४२५
चरणों में शत शत वंदन – साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी-----	४३८
हम नत मस्तक हो जाते हैं – प्रो. श्रीपाल जैन-----	४४०
श्री विजयानंद गुण गुंजन – श्री कन्हैयालाल जैन-----	४४२
पार्थ समान, महाप्रण विजयी गुरुदेव – प्रो. राम जैन-----	४४६
वि.सं. १९४० का स्वागत गीत-----	४४७

## ગુજરાતી વિભાગ

### ખણ્ડ-૪ – સ્મરણાંજલિ

પંજાબના ચાર ક્રાંતિકારી મહાત્માઓ – ડૉ. રમણલાલ ચી. શાહ-----	૧
આત્મારામજી મહારાજનું પૂજા સાહિત્ય – ડૉ. કવિન શાહ-----	૬૮
સ્વરૂપ મંત્ર – પંડિત શ્રી પનાલાલ જગજીવનદાસ ગાંધી-----	૭૮
અસારે ખલુ સંસારે – ડૉ. બિપીનચંદ્ર હિરાલાલ કાપડીયા-----	૧૦૩
સમતા – પ્રો. તારાબેન રમણલાલ શાહ-----	૧૧૨
અપ્રમાદ – શ્રી નેમચંદ એમ. ગાલા-----	૧૧૮
ઉપાધ્યાય-પદની મહત્તા – ડૉ. રમણલાલ ચી. શાહ-----	૧૪૧
જૈન મૂર્તિપૂજા ની પ્રાચીનતા અને જૈન મંદિરોનું સ્થાપત્ – ડૉ. પ્રિયબાલા શાહ-----	૧૬૦
જૈન તીર્થ તારંગા-એક પ્રાચીન નગરી – ડૉ. કનુભાઈ વ્ર. શેઠ, ડૉ. રમણલાલ ના. મહેતા -----	૧૬૭
જયવંત સૂરિ કૃત સીમંધર સ્વામી લેખ – શ્રી જયંત કોઠારી-----	૧૭૪
કવિ સહજ સુન્દર કૃત ગુણરત્નાકર છંદ – ડૉ. કાંતીલાલ બી. શાહ-----	૧૮૩
સુકડિ-ઓરસીયા સંવાદ – ડૉ. દેવબાલા સંઘવી-----	૧૮૯
સમાધિ શતકમાં મોક્ષમાર્ગ – શ્રી જયેન્દ્ર એમ. શાહ-----	૧૯૫
જયશેખર સૂરિ કૃત ત્રિભુવન દીપક પ્રબંધ – સાધ્વી શ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી-----	૨૦૧
દેવચન્દ્ર જીના આધ્યાત્મિક પત્રો – સાધ્વી શ્રી આરતીબાઈ-----	૨૨૨
શ્રાવક કવિ ઋષભદાસ – શ્રી ચીમનલાલ એમ. શાહ-----	૨૨૭

## English Division

### Part-5 – An Humble Homage

Brief life sketch of Atmaramji Maharaj – <b>S. P. Jain</b> -----	1
Samay Sunder and his Sanskrit Works – <b>Dr. Satya Vrat</b> -----	21
Ayag Pattas and the beginning of Jain Cult Workshop – <b>Dr. A. L. Srivastava</b> -----	36
Brief History of Tapa Gachha – <b>Shri Ram Vallabh Somani</b> -----	46
Spiritual Discipline & Practices in Jainism – <b>Dr. Bhagchand Jain</b> -----	60
Gommatesvara as found in Hori Vamsa Purana – <b>Dr. P. C. Jain</b> -----	97
Jain Philosophy – <b>Dr. K. C. Sogani</b> -----	100
Jain Attitude to animal World Impact on Social life in India – <b>Dr. P. K. Jain</b> -----	106
Jain Concept of Peace – <b>Dr. Sagarmal Jain</b> -----	116
Jain religious tradition – <b>Shri S. L. Gandhi</b> -----	133
Poultry Farms or Concentration Camps – <b>Hitruchi Vijayji M.S.</b> -----	141
Jain remains from Rajgir – <b>Dr. Rajiv Kumar</b> -----	146
Art of Living called Jainism – <b>Shri Pal Jain</b> -----	152